घनजीवामृत : निर्माण एवं उपयोग

घनजीवामृत, गाय के गोबर, गोमूत्र,गुड़,बेसन और बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी का एक मिश्रण मात्र है। जिसका उपयोग खेत की उर्वरता बढ़ाने के उद्देश्य से किया जाता है। इसे तैयार करने के लिए आवश्यक सामाग्री व उसकी मात्रा इस प्रकार है:

क्रम. सं.	अवयव	मात्रा
1.	देशी गाय का गोबर	100.0 किलोग्राम
2.	देशी गाय का मूत्र	05.0 लीटर
3.	बेसन	02.0 किलोग्राम
4.	गुड़	01.0 किलोग्राम
5.	बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी	0.100 किलोग्राम
6.	पानी	आवश्यकतानुसार

निर्माण विधि:-

किसी छाएदार स्थान पर 100 किलोग्राम गाय का गोबर फैलाकर रख लें। इसके ऊपर बेसन, गुड़, व बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी बिखेरकर गोमूत्र का छिड़काव कर दें। तत्पश्चात इन सभी सामग्रियों को भलि–भाँति मिला लें। इसके बाद जूट के बोरे से ढ़क कर, थोड़ा पानी छिड़क दें। बाद में इसे गोले–गोले लड्डू के रूप में बना लें, अब इसे छाए में सुखाकर बोरियों में भण्डारित करके रख लें। इस सूखे घनजीवामृत को छः महीने तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

उपयोग विधि:-

घनजीवामृत का उपयोग फसलों के बुवाई से पूर्व प्रक्षेत्र में किया जाता है। प्रक्षेत्र में हम जिस प्रकार गोबर की खाद का उपयोग करते है, उसी प्रकार घनजीवामृत का भी उपयोग किया जाता है। इस खाद में लाभदायक जीवाणु सुसुप्तावस्था में रहते है, जैसे ही इन्हे अनुकूल वातावरण मिलता है, वे सक्रिय होकर आपना कार्य आरम्भ कर देते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा

प्रसार निदेशालय

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

वित्त पोषित - -भा.कृ.अनु. प्र.- कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग
अनुसंधान संस्थान, जोन-3 कानपुर

प्राकृतिक खेती में मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन

• डा. चंचल सिंह • डा. मानवेन्द्र सिंह • डा. दीक्षा पटेल
• डा. प्रज्ञा ओझा • डा. श्याम सिंह • डा. पंकज ओझा
• डा. आनन्द सिंह • डा. नरेन्द्र सिंह
• डा. एन.के. बाजपेयी

विस्तार पत्रांक-BUAT/KVK-BD/2023/

प्रसार निदेशालय
कृषि विज्ञान केन्द्र, बाँदा
बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा-210001, उ.प्र.

तकनीकी श्रोत– राष्ट्रीय कृषि विस्तार एवं प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद व आचार्य देवब्रत जी (२०१६). कम लागत प्राकृतिक खेती राजभवन शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

जीवामृत : निर्माण एवं उपयोग

जीवामृत, गाय के गोबर, गोमूत्र, बेसन, गुड और बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी का पानी में एक घोल मात्र है। जिसका उपयोग मृदा में लाभ दायक सूक्ष्मजीवों की संख्या एवं गति विधियों को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसको तैयार करने के लिए आवश्यक सामाग्री व उसकी मात्रा इस प्रकार है–

क्रम संख्या	अवयव	मात्रा
1.	देशी गाय का गोबर	10.0 किलोग्राम
2.	देशी गाय का मूत्र	8.0–10.0 लीटर
3.	गुड़	1.0–2.0 किलोग्राम
4.	बेसन	1.0–2.0 किलोग्राम
5.	बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी	1.0 किलोग्राम
6.	पानी	180 लीटर

निर्माण विधिः-

200 लीटर क्षमता का एक प्लास्टिक ड्रम लेते हैं, जिसमें उक्त समग्रियों यथा गोबर, गुड़, बेसन व मिट्टी को अलग–अलग घोल कर ड्रम में डाल देते है। इसके बाद ड्रम की क्षमता (200 लीटर) के अनुसार इसमें पानी भर देते हैं। इसे किसी छायादार स्थान पर रख कर जूट के बोरे से ढक देते है। ध्यान इस बात का रखना होता है कि प्रतिदिन सुबह–शाम मजबूत लकड़ी की सहायता से इसे घड़ी की दिशा में घूमाना आवश्यक होता है। जिससे इसके निर्माण में उत्पन्न होने वाली गैस जैसे दृ अमोनिया, कार्बन–डाई–आक्साइड,मीथेन इत्यादि आसानी से बाहर निकल सके तथा इससे किसी प्रकार की दुर्गन्ध नहीं आए। गर्मी के दिनों में इसे बनने के सात दिनों जबकि शर्दियों में इसे 8–15 दिनों के अन्दर उपयोग कर लेना चाहिए। एक अध्ययन के अनुसार उक्त समय के बाद इसमें लाभदायक जीवाणुओं की संख्या घटनी आरम्भ होने लगती है।

उपयोग विधिः-

जीवामृत को उपलब्धता के अनुसार माह में 1–2 बार 200 लीटर प्रति एकड़ की दर से सिचाई जल के साथ उपयोग किया जा सकता है। वहीं फलदार पौधों में 2–5 लीटर प्रति पौध की दर इनके जड़ क्षेत्र में उपयोग करना चाहिए। हम फसल में इसका छिड़काव भी कर सकते है, पहला छिड़काव 5 प्रतिशत (200 लीटर पानी में 10 लीटर जीवामृत), दूसरा छिड़काव 10 प्रतिशत (200 लीटर पानी में 20 लीटर जीवामृत) जबकि तीसरा छिड़काव 15 प्रतिशत (200 लीटर पानी में 30 लीटर जीवामृत) घोल का किया जाना चाहिए।

बीजामृत : निर्माण एवं उपयोग

बीजामृत, गाय के गोबर, गोमूत्र,चूना और बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी का पानी में एक घोल मात्र है। जिसका उपयोग फसलों के बुवाई के पूर्व बीज शोधन के लिए किया जाता हैं। इसको तैयार करने के लिए आवश्यक सामाग्री व उसकी मात्रा इस प्रकार है।

क्रम सं.	अवयव	मात्रा
1.	देशी गाय का गोबर	05.0 किलोग्राम
2.	देशी गाय का मूत्र	05.0 लीटर
3.	चूना	250 ग्राम
4.	बड़े पेड़ के नीचे की मिट्टी	100 ग्राम
5.	पानी	20.0 लीटर

निर्माण विधिः-

किसी छायादार स्थान पर 20.0 लीटर क्षमता केप्लास्टिक ड्रम को रख देते है। किसी मिट्टी के पात्र में 1–2 लीटर पानी लेकर इसमे चूने को डाल देते है,थोड़ी देर में चूना उबलकर ठण्डा हो जाता है। इसके बाद 20.0 लीटर वाले ड्रम में मिट्टी, गोमूत्र एवं बुझे हुये चूने को डाल देते है। जूट के एक थैले में गोबर रखकर एक पोटली बनाते है, जिसे रस्सी की सहायता से बाँध देते है। अब गोबर की पोटली को ड्रम में डालकर उसकी रस्सी बाहर तक रख कर, ड्रम की क्षमता के अनुसार पानी भर देते है। तत्पश्चात रस्सी की सहायता से पोटली ऊपर–नीचे करते हैं तथा जुट की बोरी से ढक कर छोड़ देते हैं। इसे 2–3 दिनों तक दिन में दो बार लकड़ी की सहायता से घड़ी की सुई की दिशा में घुमाते रहे जिससे किसी प्रकार की दुर्गन्ध नहीं आए।

उपयोग विधिः-

बीजामृत का उपयोग फसलों के बुवाई से पूर्व बीज शोधन हेतु किया जाता है। बुवाई के एक दिन पहले किसी छाएदार स्थान पर बीज को फैला दें, इसके बाद बीजामृत का इसपर छिड़काव करके हल्के हाथ से इसे मिला दें। पूरी रात सुखाने के बाद अगले दिन बीज की बुवाई कर सकते हैं।